VI. मूल्यस्थिति

हेडलाइन मुद्रास्फीति जुलाई 2010 तक पांच महीनों के दौरान दो अंकों में रहने के बाद कम होने लगी है जिससे यह संकेत मिलता है कि अनुकूल आधारभूत प्रभाव पड़ने लगे हैं तथा विनिर्मित वस्तुओं की कीमतों का दबाव कुछ कम होने लगा है। सामान्य मानसून के बावजूद मुद्रास्फीति आरामदेह स्तर से ऊपर बनी हुई है जिसका मुख्य कारण खाद्य मुद्रास्फीति है तथा ऐसा लगता है कि इसने ढांचागत रूप ले लिया है। थोक मूल्य सूचकांक संबंधी नयी श्रृंखला, जिसका आधार 1993-94 से बदल कर 2004-05 कर दिया गया है, के अंतर्गत और अधिक हाल के उत्पादन और खपत के तौर-तरीकों को प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया है लेकिन मुद्रास्फीति के समग्र रुझानों में कोई भारी परिवर्तन भी नहीं हुआ है। मुद्रास्फीति के दबाव बने हुए हैं तथा मौद्रिक नीति के संचालन के लिए संबंधित चिंताओं को कम करने हेतु मुद्रास्फीति में और कमी लाया जाना आवश्यक होगा। एक वर्ष से अधिक समय के बाद उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति के विभिन्न घटक दो अंकों से गिरकर नीचे आ गए लेकिन वे अभी भी ऊंचे स्तर पर बने हुए हैं जो उच्च खाद्य और ईंधन संबंधी मुद्रास्फीति के सूचक हैं।

VI.1 थोक मूल्य सूचकांक (आधार 2004-05) द्वारा आंकी जानेवाली हेडलाइन मुद्रास्फीति मार्च से जुलाई 2010 तक लगातार पांच महीनों के दौरान दो अंकों में रहने तथा मुद्रास्फीति की प्रक्रिया के और अधिक व्यापक बने रहने के कारण भारतीय रिज़र्व बैंक की नीति 'पहले की स्थिति प्राप्त करने के प्रबंधन' से बदलकर मुद्रास्फीति रोकने और मुद्रास्फीति के प्रभावों को स्थिर करने की ओर अग्रसर हुई। इसका संकेत जनवरी और सितंबर 2010 के बीच मौद्रिक नीति को नपे-तुले कदमों द्वारा सामान्य बनाने की प्रक्रिया से मिलता है।

VI.2 वर्ष 2010-11 की दूसरी तिमाही में हेडलाइन मुद्रास्फीति में थोड़ी कमी दिखाई दी लेकिन वह फिर भी ऊंचे स्तर पर बनी रही। गैर-खाद्य विनिर्मित उत्पादों की

कीमतों में वृद्धि की गति हाल के महीनों में कम हुई है जिससे मुद्रास्फीति के व्यापक होने की गति में कुछ कमी आने तथा कीमतों के दबाव के धीरे-धीरे स्थिर होने का संकेत मिलता है। तथापि सामान्य मानसून के बावजूद खाद्य मुद्रास्फीति उच्च स्तर पर बनी हुई है क्योंकि दूध, अंडों, मछली और मांस जैसी मानसून से कम प्रभावित होने वाली अनाज से भिन्न कुछ मदों की कीमतों के दबावों में भारी वृद्धि हुई है। प्राथमिक वस्तुओं और खनिजों की कीमतों में हुई पर्याप्त वृद्धि तथा वैश्विक स्तर पर कई वस्तुओं की कीमतों में दबाव बने रहने के कारण घरेलू मुद्रास्फीति के बढ़ने का खतरा बना हुआ है, यद्यपि उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति के विभिन्न घटक, एक वर्ष से अधिक समय के बाद कम होकर एक अंक में आने के बावजूद, अभी भी ऊंचे स्तर पर बने हुए हैं? चूंकि हेडलाइन मुद्रास्फीति अभी भी अधिक है इसलिए मुद्रास्फीति को रोकना तथा उसके स्फीतिकारी दबावों को स्थिर करना मौद्रिक नीति के लिए 2010-11 के दौरान चुनौती भरा काम बना रहेगा।

वैश्विक मुद्रास्फीति

VI.3 वैश्विक मुद्रास्फीति का परिवेश, विकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों, जहां पहले की स्थिति की बहाली कमजोर होने के कारण कम मुद्रास्फीति का परिवेश बना हुआ था, और उभरती हुई तथा विकासशील अर्थव्यवस्था वाले देशों, जहाँ पहले की स्थिति की तेजी से बहाली के साथ-साथ मुद्रास्फीति में वृद्धि के लक्षण बने हुए हैं, के बीच मुद्रास्फीति में भिन्नता बढ़ने के कारण अभी भी कम स्तर पर है। अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष के अक्तूबर 2010 के विश्व आर्थिक संभावना सर्वेक्षण में यह पूर्वानुमान किया गया है कि वर्ष 2010 में विकसित अर्थव्यवस्थावाले देशों में कीमतों में मामूली वृद्धि होगी और उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति 2009 के लगभग शून्य से बढ़कर वर्ष 2010 में 1.4 प्रतिशत तथा बाद में वर्ष 2011 में 1.3 प्रतिशत हो जाएगी। लेकिन उभरती हुई और विकासशील अर्थव्यवस्था वाले देशों में मुद्रास्फीति के वर्ष 2009 के 5.2 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2010 में 6.2 प्रतिशत हो जाने तथा बाद में वर्ष 2011 में घटकर 5.2 प्रतिशत हो जाने का अनुमान व्यक्त किया गया है। अधिकांश उन्नत अर्थव्यवस्था वाले देशों में अधिक क्षमता होने और बेरोजगारी की दर के वर्ष 2009 से 2011 के दौरान 8 प्रतिशत से अधिक रहने की संभावना के चलते श्रम बाजार में मंदी के कारण कीमतों पर दबाव कम रहने की संभावना है। यद्यपि हाल के महीनों में अधिकांश उन्नत अर्थव्यवस्था वाले देशों में हेडलाइन मुद्रास्फीति में थोड़ी वृद्धि हुई लेकिन वैश्विक स्तर पर मुद्रास्फीति के परिवेश के सुखद बने रहने की संभावना है, जिसका मुख्य कारण ऊर्जा और खाद्यान्नों की कीमतों में वृद्धि है। लेकिन उन्नत अर्थव्यवस्था वाले देशों में मूल मुद्रास्फीति कम रही जिससे वहां कीमतों पर मांग के दबाव के अभाव का संकेत मिलता है। इससे उन देशों को पहले की स्थिति बहाल करने में मदद के लिए प्रसरणशील मौद्रिक नीति पर कायम रहने की गुंजाइश बनी रहेगी।

VI.4 आर्थिक सहयोग और विकास संगठन के सदस्य देशों में वर्षानुवर्ष उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति, जो मई 2010 में बढ़कर 2.0 प्रतिशत हो गई थी, मूल मुद्रास्फीति में कमी आने के बाद (खाद्यान्न और ऊर्जा के जनवरी 2010 में 1.6 प्रतिशत से कम होकर अगस्त 2010 में 1.2 प्रतिशत हो जाने को छोड़कर) अगस्त 2010 में कम होकर 1.6 प्रतिशत हो गई। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन के सदस्य देशों में निजी खपत की मांग अपेक्षाकृत कमजोर बनी हुई है जो अपेक्षाकृत कम क्षमता के उपयोग के साथ इस बात की सूचक है कि कम मुद्रास्फीति की स्थिति और अधिक समय तक बनी रह सकती है।

VI.5 अधिकांश उभरती बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों में मुद्रास्फीति हाल के महीनों में बढ़ी है लेकिन वह अभी भी कम बनी हुई है (चार्ट VI.1 बी)। वर्ष 2009 की प्रारम्भिक अवधि में अत्यंत कम स्तर से बढ़कर अन्तरराष्ट्रीय पण्य मूल्यों में हुई पर्याप्त वृद्धि ने रूपांतरित होकर मुद्रास्फीति में वृद्धि का रूप ले लिया क्योंकि 2008 की पहली छमाही

चार्ट VI.1: उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति

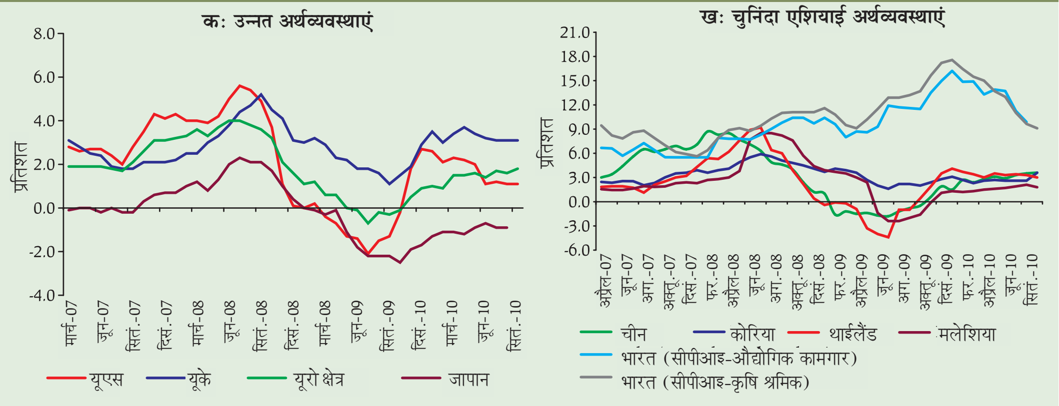

में बढ़ी हुई कीमतों का आधारभूत प्रभाव कम हो गया। अन्तरराष्ट्रीय पण्य मूल्यों में किसी भी तरह की वृद्धि का मुद्रास्फीति पर प्रभाव विकासशील देशों के मामले में ज्यादा है क्योंकि उनके खपत-समूह में पण्यों का हिस्सा, विशेषतः खाद्यान्न और तेल का, अपेक्षाकृत ज्यादा है। उभरती बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों के मामले में अपेक्षाकृत पूर्व स्थिति की सुदृढ़ बहाली तथा उत्पादन संबंधी अंतरालों के तेजी से कम होने के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर पूर्व स्थिति की बहाली के स्वरूप में भिन्नता के कारण भी उभरते बाजारों के लिए एक चुनौती बनी हुई है। चूंकि, उभरती बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों में पण्यों के अंतरराष्ट्रीय मूल्य अब वृद्धि के कारण अधिक प्रभावित हो रहे हैं, इसलिए सुदृढ़ वृद्धि के कारण उच्च आयातित मुद्रास्फीति का जोखिम बढ़ सकता है।

VI.6 उन्नत अर्थव्यवस्था वाले देशों में नीति संबंधी दरें लगभग शून्य/अत्यंत कम स्तर पर बनी हुई है, क्योंकि वर्ष 2010-11 की दूसरी तिमाही में पहले की बहाल स्थिति को बनाए रखना और अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया। अधिकांश केन्द्रीय बैंकों के आकलन से मध्यम अवधि में मांग के कारण मुद्रास्फीति पर दबावों के अभाव का संकेत मिलता है। चूंकि पहले की स्थिति की बहाली की गति धीमी पड़ रही थी इसलिए बैंक ऑफ जापान ने नीति दर में कमी करने का निर्णय लिया। दूसरी ओर इज़राइल और कनाडा ने, मुद्रास्फीति के जोखिमों की वृद्धि की संभावनाओं को स्वीकार करते हुए वर्ष 2010-11 की दूसरी तिमाही में नीति संबंधी दरों में वृद्धि कर दी। उभरती अर्थव्यवस्था वाले देशों में चीन और थाइलैण्ड ने वर्ष 2010-11 की दूसरी तिमाही में अपनी नीति दरों में वृद्धि कर दी जबकि दक्षिण अफ्रीका ने इस दर में कमी की (सारणी VI.1)।

वैश्विक पण्य मूल्य

VI.7 अगस्त-सितम्बर 2010 के दौरान कई पण्यों की आपूर्ति में व्यवधान के चलते अन्तरराष्ट्रीय पण्य मूल्यों में पुनः वृद्धि हुई। मई-जून 2010 के दौरान पण्य मूल्यों में पहले कुछ कमी आई क्योंकि उभरती अर्थव्यवस्था वाले देशों में यूरो क्षेत्र में पहले की स्थिति की बहाली और मांग में उच्च वृद्धि को बनाए रखने संबंधी समस्याओं का प्रभाव पण्य बाजारों पर पड़ा (चार्ट VI 2)।

VI.8 वैश्विक स्तर पर पहले की स्थिति की बहाली में अनिश्चितताएं बने रहने का पर्याप्त प्रभाव कच्चे तेल की कीमतों पर पड़ा। वर्ष 2010 की दूसरी तिमाही में कच्चे तेल की औसत कीमतें 75.5 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल थीं जो पहली तिमाही की 78.2 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल

सारणी VI.1: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में पॉलिसी दरें और मुद्रास्फीति

(प्रतिशत)

देश / क्षेत्र	प्रमुख नीति दर	नीति दर (20 अक्तूबर 2010 तक)	नीति दरों में परिवर्तन (आधार अंक)		सीपीआइ मुद्रास्फीति (साल-दर-साल)	
			अप्रैल 09 - अगस्त 09	सितंबर 09 से	सितंबर 2009	सितंबर 2010
1	2	3	4	5	6	7
विकसित अर्थव्यवस्थाएं						
ऑस्ट्रेलिया	नकद दर	4.50 (5 मई 2010)	(-) 25	175	1.3#	3.8#
कनाडा	एकदिवसीय दर	1.00 (8 सितं. 2010)	(-) 25	75	-0.9	1.9
यूरो क्षेत्र	पुनर्वित्तीयन संबंधी मुख्य परिचालनों पर ब्याज दर	1.00 (13 मई 2009)	(-) 50	0	-0.3	1.8
जापान	अनावंटित एकदिवसीय मांग दर	0.00 to 0.10 (5 अक्तू. 2010)	0	(-) 10	-2.2*	-0.9*
ब्रिटेन	सरकारी बैंक दर	0.50 (5 मार्च 2009)	0	0	1.1	3.1
अमेरिका	फेडरल निधि दर	0.00 to 0.25 (16 दिसं. 2008)	0	0	-1.3	1.1
विकासशील अर्थव्यवस्थाएं						
ब्राजिल	सेलिक दर	10.75 (21 जुला. 2010)	(-) 250	200	4.3	4.7
भारत	रिवर्स रिपो दर	5.00 (16 सितं. 2010)	(-) 25	175	11.6	9.8
	रिपो दर	6.00 (16 सितं. 2010)	(-) 25	125		
				(100)		
चीन	बेंचमार्क एकवर्षीय	5.56 (19 अक्तू. 2010)	0	25	-0.8	3.6
	उधार दर		0	(150)		
इंडोनेशिया	बीआइ दर	6.50 (5 अग. 2009)	(-) 125	0	2.8	5.8
इजराइल	प्रमुख दर	2.00 (1 अक्तू. 1, 2010)	(-) 25	150	2.8	2.4
कोरिया	आधार दर	2.25 (09 जुला. 2010)	0	25	2.2	3.6
फिलीपींस	रिवर्स रिपो दर	4.00 (9 जुला. 2009)	(-) 75	0	0.6	3.5
रूस	पुनर्वित्तीयन दर	7.75 (1 जून 2010)	(-) 200	(-) 225	10.7	7.0
दक्षिण अफ्रीका	रिपो दर	6.00 (10 सितं. 2010)	(-) 250	(-) 100	6.1	3.2
थाईलैंड	1 दिवसीय पुनःक्रय दर	1.75 (25 अग. 2010)	(-) 25	50	-1.0	3.0

#: ति3.   *अगस्त

नोट: 1. भारत के लिए, मुद्रास्फीति संबंधी आंकड़े औद्योगिक कामगारों के लिए सीपीआइ से संबंधित हैं।

2. स्तंभ (3) कोष्ठकों के आंकड़ों में उन तारीखों का संकेत मिलता है जब नीतिगत दरों को अंतिम बार संशोधित किया गया था।

3. स्तंभ (4) एवमं (5) कोष्ठकों के आंकड़े अवधि के दौरान नकदी आरक्षित अनुपात में घटबढ़ का संकेत करते हैं।

स्रोत: अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, संबंधित केंद्रीय बैंकों की वेबसाइटें।

की कीमत से कम थीं। लेकिन हाल के सप्ताहों में कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि हुई और डब्ल्यूटीआई कच्चे तेल की कीमतें 28 अक्तूबर 2010 की स्थिति के अनुसार 82.2 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल रहीं। अमेरिकी ऊर्जा सूचना प्रशासन के अनुसार वैश्विक मांग वृद्धि में अनुमानित थोड़ी कमी के बावजूद, वैश्विक स्तर पर तेल के स्टॉक में धीरे-धीरे कमी आने के कारण तेल की कीमतें बढ़ सकती हैं।

VI.9 खाद्यान्नों के अन्तरराष्ट्रीय मूल्य में, जिनमें जनवरी-जून 2010 के दौरान थोड़ी कमी आई थी, हाल के महीनों में वृद्धि हुई (चार्ट VI.3)। अनेक पण्यों की आपूर्ति में मौसमों के कारण व्यवधान के चलते उनकी कीमतों में वृद्धि हुई। रूस तथा अन्य गेहूं उत्पादक देशों में मौसम के प्रभाव के कारण उत्पादन में आई कमी तथा बाद में अनाज के निर्यात पर रूस द्वारा प्रतिबंध लगाए जाने के कारण जनू-सितम्बर 2010 के दौरान गेहूं की कीमतों में 72 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अमेरिका में अपेक्षाकृत कम उपज की संभावना तथा बाजार में कम गेहूं की उपलब्धता के कारण मोटे अनाज की कीमतों में भी वृद्धि हुई। यूरोपीय संघ और कालासागर क्षेत्र में सूखे के कारण सोयाबीन की

चार्ट VI.2 : अंतरराष्ट्रीय पण्य कीमतें

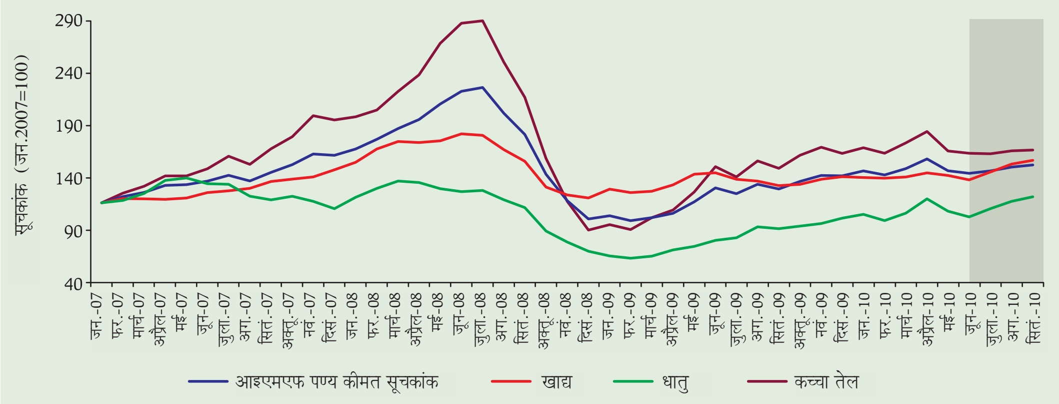

उपज में आई कमी तथा दक्षिण अमेरिका में अगली फसल संबंधी कठिनाइयों का खाद्य तेलों की कीमतों पर प्रभाव पड़ा। कच्चे कपास के प्रमुख उत्पादक और निर्यातक पाकिस्तान में बाढ़ के कारण कपास के उत्पादन में आई कमी के चलते उसकी कीमतों में वृद्धि हुई। चीन द्वारा धातुओं का उत्पादन कम किए जाने के कारण धातुओं के मूल्य भी बढ़े। अनेक पण्यों की कीमतों में एक साथ वृद्धि के कारण मुख्यतः उन पण्यों के मामलों में उच्च आयातित मुद्रास्फीति का जोखिम बना रहता है जिनकी घरेलू कीमतों पर वैश्विक रुझानों का प्रभाव पड़ता है। संबंधित देशों द्वारा आपूर्ति में व्यवधान के प्रतिकूल प्रभाव कम करने के लिए किए गए

चार्ट VI.3 : अन्तरराष्ट्रीय खाद्य कीमतें

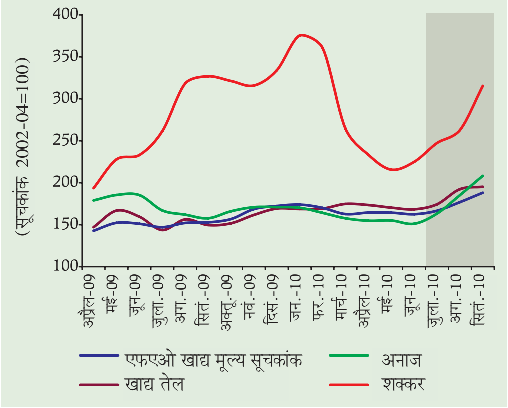

प्रशासनिक उपायों के कारण भी प्रतिबंधात्मक व्यापार की स्थितियां पैदा हो सकती हैं जिनके चलते ऐसी वस्तुओं के वैश्विक मूल्यों में और वृद्धि हो सकती है।

भारत में मुद्रास्फीति की स्थिति

थोक मूल्य मुद्रास्फीति

VI.10 थोक मूल्य सूचकांक संबंधी मुद्रास्फीति में नवंबर 2009 से अपेक्षाकृत तेज गति से वृद्धि हुई है तथा अप्रैल 2010 तक यह बढ़कर (वर्षानुवर्ष) 11.0 प्रतिशत हो गई तथा वर्ष 2010-11 की पहली तिमाही में ऊंचे स्तर पर बनी रही (चार्ट VI.4 ए और बी)। लेकिन मई-अगस्त 2010 की अवधि में मुद्रास्फीति में थोड़ी कमी दिखाई दी जिससे यह संकेत मिला कि मुद्रास्फीति अपने शीर्ष स्तर तक पहुँच चुकी है (थोकमूल्य सूचकांक की नई श्रृंखला के अनुसार सितम्बर 2010 में 8.6 प्रतिशत अनंतिम, आधार 2004-2005=100)। थोकमूल्य सूचकांक में वृद्धि की गति, जो मार्च 2009 से निरंतर बनी हुई थी, हाल के महीनों में पर्याप्त धीमी हो गई प्रतीत होती है तथा मुद्रास्फीति में वित्त वर्ष के दौरान होने वाली वृद्धि में पिछले वर्षों की तुलना में अपेक्षाकृत कमी आई है (चार्ट VI.4.सी)। ऐसा मासानुमास मौसमी आधार पर समायोजित वार्षिक मुद्रास्फीति से भी (सितम्बर 2010 को छोड़कर) स्पष्ट होता है (चार्ट VI.4 डी)।

चार्ट VI.3: थोक मूल्य मुद्रास्फीति की प्रवृत्तियां

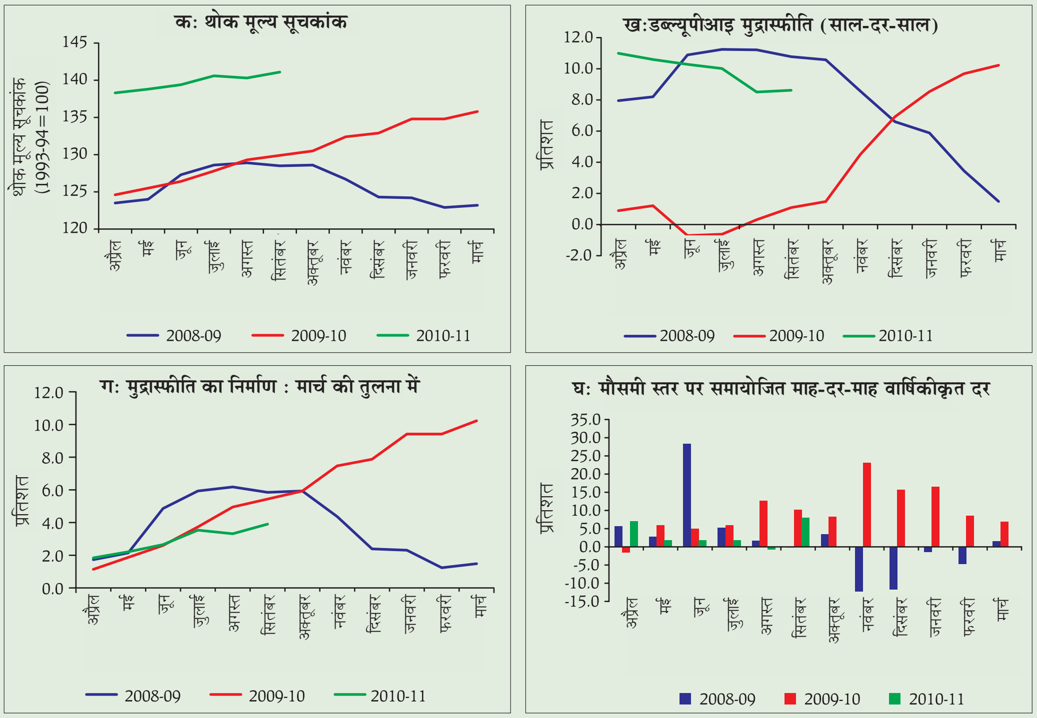

नई श्रृंखला का थोक मूल्य सूचकांक[1]

VI.11 वर्ष 2004-05 को आधार मानकर तैयार की गई नई श्रृंखला का थोकमूल्य सूचकांक 14 सितंबर 2010 को लागू कर दिया गया तथा 1993-94 की श्रृंखला का प्रयोग बंद कर दिया गया। नई श्रृंखला में प्राथमिक वस्तुओं की तुलना में ईंधन और विद्युत तथा विनिर्मित उत्पादों को अधिक भार/महत्त्व दिया गया है, यद्यपि समग्र दृष्टि से पूरे समूह को ध्यान में रखने पर विनिर्मित उत्पादों को दिए गए भार/महत्त्व में बहुत ज्यादा परिवर्तन नहीं आया है लेकिन खाद्यान्न से भिन्न विनिर्मित उत्पादों को ज्यादा महत्त्व दिया गया है। साथ ही पर्याप्त मदें जोड़ दी गई हैं / उनमें संशोधन कर दिए गए हैं जो एक दशक की अवधि में उत्पादन के तौर तरीकों में परिवर्तन के सूचक हैं (सारणी VI.2)। इस प्रकार मूल्य सूचकांक के स्तर के अनुसार पुरानी श्रृंखला और नई श्रृंखला के बीच के अंतर में मुख्य रूप से विनिर्मित उत्पाद समूह का योगदान सर्वाधिक है जो इस समूह में शामिल की गई नई मदों की भारी संख्या के प्रभाव का द्योतक है (वर्तमान मदों / संशोधन को शामिल करते हुए)। पुरानी श्रृंखला में से 176 मदों को हटा देने/संशोधित कर देने के बाद

[1] वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के आर्थिक सलाहकार कार्यालय ने बताया है कि अनुसंधान और विश्लेषण के लिए नई श्रृंखला के थोक मूल्य सूचकांक (आधार 2004-05) के आंकड़ों का प्रयोग अप्रैल 2005 से किया जा सकता है। अनुसंधान से भिन्न प्रयोजनों के लिए थोकमूल्य सूचकांक श्रृंखला (आधार 2004-05) अगस्त 2010 से ही लागू होगी जो इसके प्रथम निर्गम की तारीख अर्थात 14 सितंबर 2010 है।

सारणी VI.2 : संशोधित डब्ल्यूपीआई श्रृंखला में भारों और पण्यों में प्रमुख परिवर्तन

मद	भार		पण्यों की संख्या		
	नई श्रृंखला (आधार:2004-05)	पुरानी श्रृंखला (आधार:1993-94)	नई श्रृंखला (आधार:2004-05)	पुरानी श्रृंखला (आधार:1993-94)	नई मदें जोड़ी गई/संशोधित
1	2	3	4	5	6
सभी पण्य	**100.00**	**100.00**	**676**	**435**	**417**
I. प्राथमिक वस्तुएं	**20.12**	**22.03**	**102**	**98**	**11**
खाद्य	14.34	15.40	55	54	1
खाद्येतर और खनिज	5.78	6.63	47	44	10
II. ईंधन और ऊर्जा	**14.91**	**14.23**	**19**	**19**	**0**
III. विनिर्मित उत्पाद	**64.97**	**63.75**	**555**	**318**	**406**
खाद्य	9.97	11.54	57	41	25
खाद्येतर	55.00	52.21	498	277	381

भी नई श्रृंखला के थोक मूल्य सूचकांक में शामिल किए गए पण्यों की संख्या 435 से बढ़कर 676 हो गई है। थोक मूल्य सूचकांक के मूल्य कोटेशनों की कुल संख्या पुरानी श्रृंखला के 1918 से पर्याप्त बढ़ाकर नई श्रृंखला में 5,482 कर दी गई है।

VI.12 नई श्रृंखला और पुरानी श्रृंखला के अनुसार, औसत समग्र मुद्रास्फीति की दर पिछले 5 वर्षों (अर्थात् 2005-06 से 2009-10 तक) के लिए लगभग 5.5 प्रतिशत है जिससे यह संकेत मिलता है कि दोनों श्रृंखलाओं के बीच मुद्रास्फीति में अधिक अंतर नहीं है। नई और पुरानी श्रृंखलाओं के बीच अलग-अलग अवधि में कभी-कभी मुद्रास्फीति में अंतर पाया गया तथा मुद्रास्फीति की दर की दृष्टि से (वर्षानुवर्ष) किसी भी महीने में अधिकतम अंतर लगभग 1.8 प्रतिशत अंकों का था। लेकिन विभिन्न पण्य समूहों के मामले में मुद्रास्फीति में अंतर अपेक्षाकृत अधिक था। वर्ष 2010-11 के लिए नई श्रृंखला में उच्चतर खाद्यान्न मुद्रास्फीति (दोनों - प्राथमिक और विनिर्मित) मुख्य रूप से खाद्यान्न से भिन्न विनिर्मित उत्पादों से संबंधित अपेक्षाकृत कम मुद्रास्फीति द्वारा समायोजित हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप, हेडलाइन मुद्रास्फीति में अंतर का आकार अपेक्षाकृत कम बना रहता है (चार्ट VI.5)। खाद्यान्न से भिन्न विनिर्मित उत्पादों से संबंधित मुद्रास्फीति से, जो विशेष रूप से सामान्य अनुमान और मांग पक्ष संबंधी बातों की भूमिका के अनुमान के लिए महत्त्वपूर्ण है, संकेत मिलता है कि (क) दोनों श्रृंखलाओं में हाल के महीनों के रुझानों के अनुसार मुद्रास्फीति में कुछ कमी आई है, और इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण, (ख) नई श्रृंखला के अनुसार वर्ष 2010-11 के दौरान (जुलाई तक), पुरानी श्रृंखला की तुलना में, मुद्रास्फीति 1.4 से 2.2 प्रतिशत अंक के बीच कम है जिसका मुख्य कारण थोक मूल्य सूचकांक के निर्धारण के लिए कई नई मदें शामिल करने के कारण आया भारी परिवर्तन है (406 विनिर्मित उत्पाद जोड़े गए/उनमें संशोधन किए गए)।

VI.13 इस प्रकार थोक मूल्य सूचकांक की नई श्रृंखला पण्यों को शामिल करने और उनकी संख्या की दृष्टि से व्यापक परिवर्तन की सूचक है तथा बदलते हुए आर्थिक ढांचे का अधिक प्रतिनिधित्व करती है। यह वर्तमान आर्थिक ढांचे का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करती है जो उत्पादन तथा खपत के तौर-तरीकों में आनेवाले परिवर्तनों के अनुरूप है। खाद्यान्न से भिन्न विनिर्मित समूह के अंतर्गत नई श्रृंखला में और ज्यादा वस्तुओं को शामिल किया गया है जिसके अंतर्गत इलेक्ट्रॉनिक तथा संचार उपकरण भी शामिल हैं जिनकी कीमतों में समय बीतने के साथ कमी आई है। लेकिन नई श्रृंखला में खाद्यान्न संबंधी मुद्रास्फीति पुरानी श्रृंखला की तुलना में अधिक है जिससे अंडा, मांस और मछली, दूध और दालों जैसी अधिक प्रोटीन वाली वस्तुओं के घरेलू खपत के तौर-तरीकों में आए महत्त्वपूर्ण रुझान

चार्ट VI.5: डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति - पुरानी और नई श्रृंखलाओं की तुलना

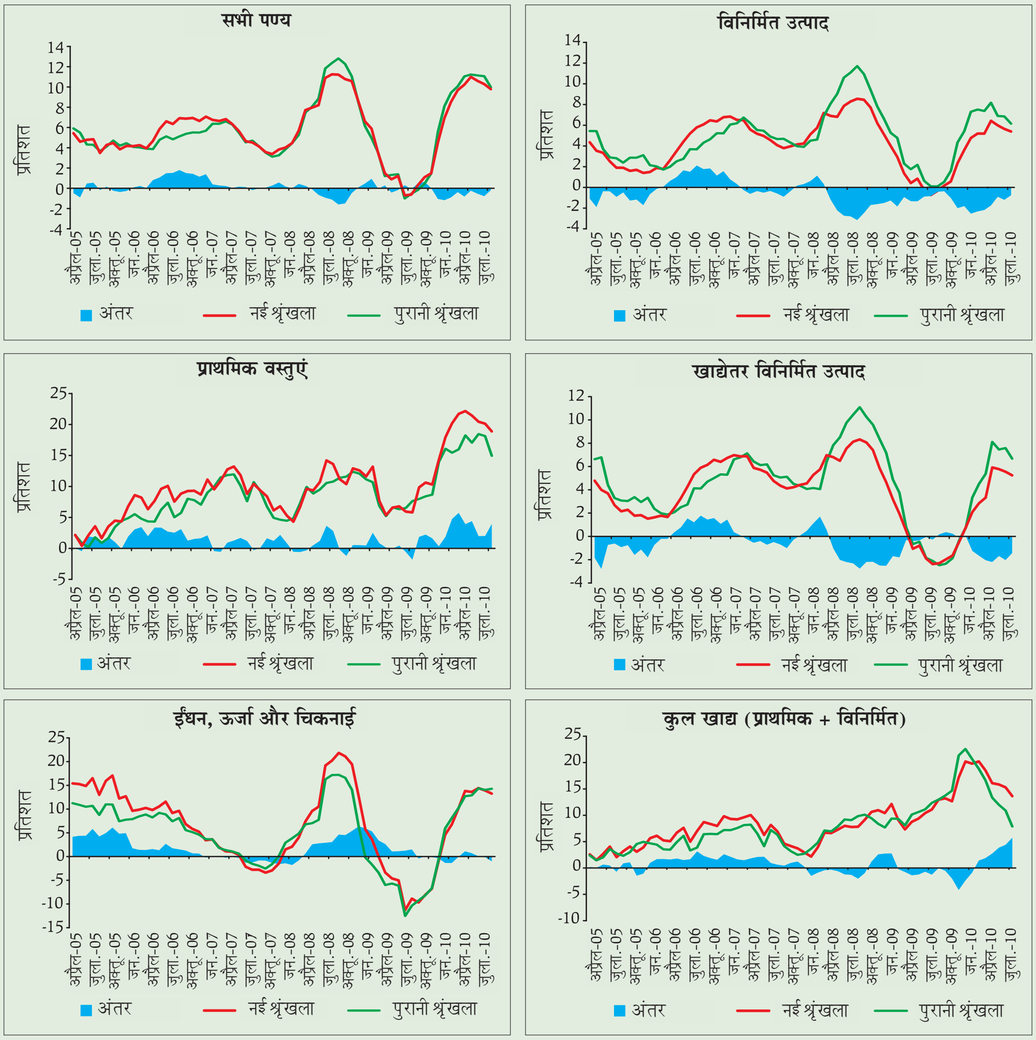

का संकेत मिलता है जिनकी कीमतों में आय के स्तर में परिवर्तन आने के कारण अधिक वृद्धि हुई है और जिनकी आपूर्ति मांग बढ़ने के अनुरूप नहीं रही है।

VI.14 दोनों श्रृंखलाओं के अंतर्गत मासानुमास गति से (मौसम के अनुसार समायोजित, वार्षिक) इसी तरह के रुझानों का संकेत मिलता है, यद्यपि हाले के महीनों में नई श्रृंखला में सामान्यतः कमी की प्रवृत्ति पाई गई है, जबकि पुरानी श्रृंखला में ऐसा नहीं है (चार्ट VI.6)। लेकिन खाद्यान्नों की कीमतों में दबाव बढ़ने के चलते सितंबर 2010 में कीमतों में पुनः वृद्धि हुई।

VI.15 यद्यपि हाल के महीनों में थोक मूल्य सूचकांक सबंधी मुद्रास्फीति में थोड़ी कमी आई है, लेकिन यह अभी

चार्ट VI. 6: वार्षिककृत मासानुमास (मौसम के आधार पर समायोजित) मुद्रास्फीति दर

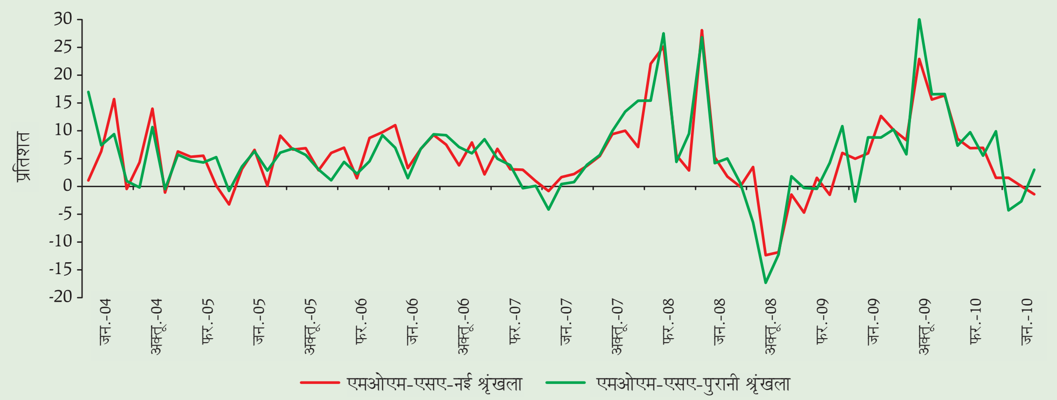

भी बहुत अधिक है। समग्र मुद्रास्फीति में खाद्यान्न मुद्रास्फीति का अंश जनवरी 2010 से आरंभ करके घट गया है क्योंकि विनिर्मित खाद्य उत्पादों संबंधी मुद्रास्फीति कम हो गई है जिसमें शक्कर प्रमुख है। खाद्यान्न से भिन्न विनिर्माण समूह का योगदान कमोबेश पिछले कुछ महीनों के दौरान पहले जैसा ही रहा है, लेकिन उसमें अगस्त और सितंबर 2010 में थोड़ी कमी आई है (चार्ट. VI.7)।

VI.16 हेडलाइन मुद्रास्फीति में जिन प्रमुख वस्तुओं का अधिक योगदान है उनमें खनिज तेलों, दूध, अंडा, मछली और मांस जैसी खाने की वस्तुएं, खनिज और वस्त्र शामिल हैं (चार्ट VI.8)। खाद्यान्नों की कीमतों में वृद्धि का समग्र मुद्रास्फीति पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ रहा है क्योंकि सितंबर 2010 में समग्र मुद्रास्फीति में केवल प्राथमिक खाद्यान्नों संबंधी मुद्रास्फीति का योगदान लगभग 31 प्रतिशत रहा।

VI.17 विभिन्न उपसमूहों संबंधी मुद्रास्फीति का रुझान हेडलाइन मुद्रास्फीति जैसा ही रहा तथा उसमें हाल के महीनों में कमी आई (चार्ट VI.9)। खाद्यान्न संबंधी मुद्रास्फीति में आई कमी में मुख्यतः विनिर्मित खाद्य उत्पादों का योगदान रहा। विनिर्मित गैर-खाद्यान्न

चार्ट VI.7:समग्र मुद्रास्फीति में योगदान - प्रमुख समूह

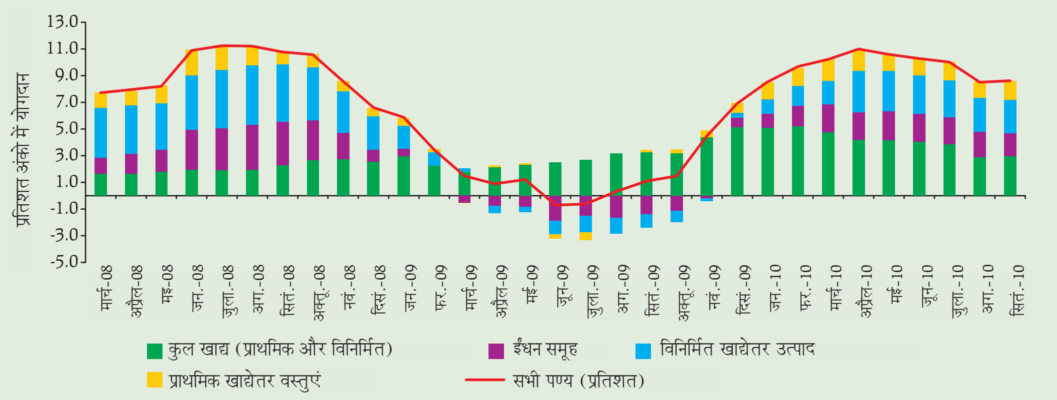

चार्ट VI. 8: डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति के प्रमुख योगदानकर्ता : सितम्बर 2010

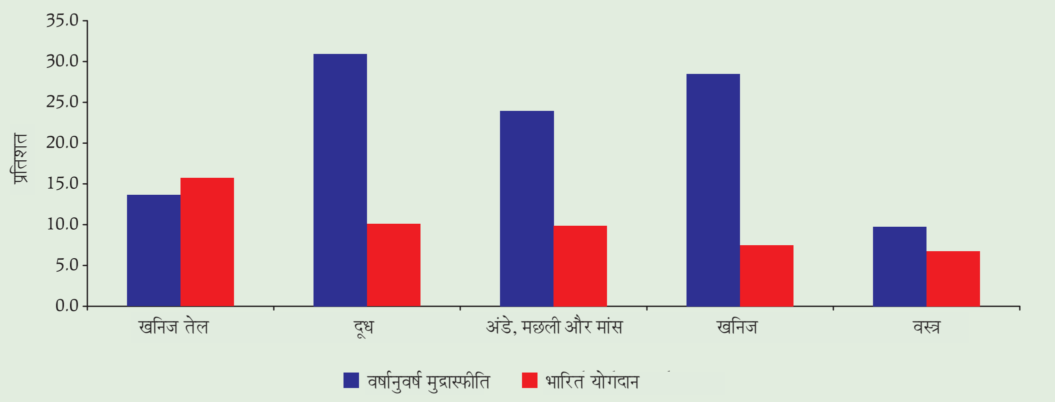

उत्पादों संबंधी मुद्रास्फीति में आनेवाली वृद्धि रुक गई लगती है तथा ईंधन संबधी मुद्रास्फीति में, पिछले वर्ष कीमतों में हुई वृद्धि के मूल प्रभाव के कारण, थोड़ी कमी आई।

VI.18 आवश्यक वस्तु समूह संबंधी मुद्रास्फीति में, जिसमें वर्ष 2009-10 के दौरान समग्र रुझान से पर्याप्त अंतर रहा, भी कमी आई है (चार्ट VI.10क)। खाद्यान्न संबंधी मुद्रास्फीति में कमी आने तथा गैर-खाद्यान्न मुद्रास्फीति में वृद्धि - इन दोनों कारणों से मुद्रास्फीति के विभिन्न उप-घटकों में एकरूपता से हाल के महीनों में मुद्रास्फीति के सामान्य स्वरूप का अनुमान मिलता है।

VI.19 प्रमुख समूहों के अंतर्गत प्राथमिक वस्तुओं से संबंधित मुद्रास्फीति में वर्षानुवर्ष फरवरी 2010 से कमी आई लेकिन उसमें सितंबर 2010 में थोड़ी वृद्धि हुई (चार्ट VI.10 बी)। लेकिन प्राथमिक वस्तुओं से संबंधित मुद्रास्फीति में आनेवाली कमी का मुख्य कारण एक वर्ष पहले कीमतों में आई भारी तेजी का मूल प्रभाव था। प्राथमिक खाद्यान्न वस्तुओं संबंधी मुद्रास्फीति (वर्षानुवर्ष), मई-जून 2010 के 22.9 प्रतिशत के उच्च स्तर से कम होकर 16 अक्तूबर 2010 को समाप्त सप्ताह के लिए 13.8 प्रतिशत हो गई लेकिन मार्च 2010 से थोक मूल्य सूचकांक के अंतर्गत प्राथमिक वस्तुओं का सूचकांक 8.6 प्रतिशत बढ़ गया

चार्ट VI.9: डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति: प्रमुख उप-वर्ग

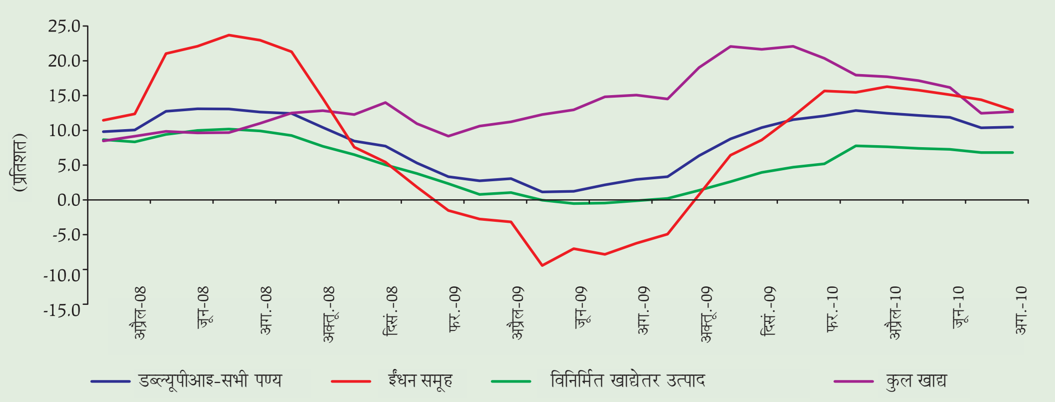

चार्ट VI.10: वार्षिक डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति

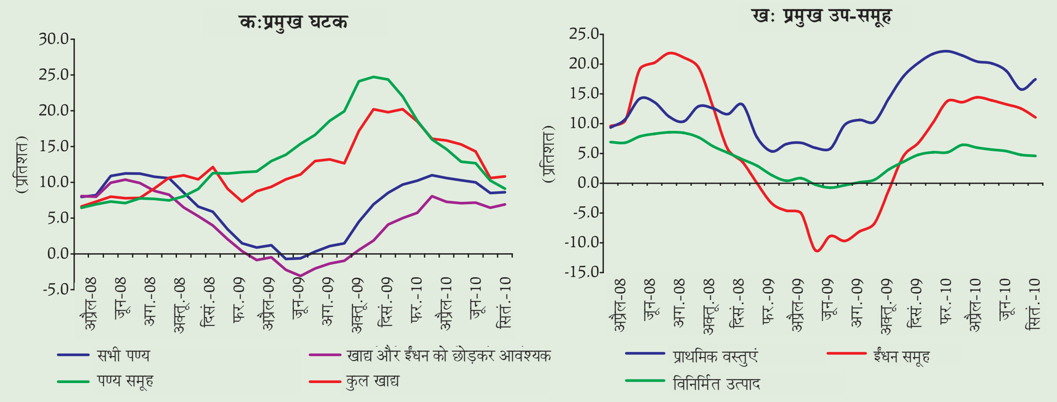

(16 अक्तूबर 2010 की स्थिति के अनुसार) जिसमें खाद्यान्न संबंधी वस्तुओं का स्थान प्रमुख रहा।

VI.20 इस समय मुद्रास्फीति के प्रबंधन की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण चिंता यह है कि अच्छे मानसून के बावजूद प्राथमिक खाद्य वस्तुओं की कीमतों में गिरावट नहीं आ रही है। सामान्य मानसून के बाद आशा थी कि खाद्य वस्तुओं की कीमतों में पर्याप्त कमी होगी लेकिन खाद्य वस्तुओं संबंधी मुद्रास्फीति दो अंकों में बनी हुई है। इस बात पर विशेष रूप से ध्यान देना है कि आमदनी का स्तर बढ़ने के साथ खपत वाली वस्तुओं में विविधता बढ़ रही है तथा लोग दूध, सब्जियों, फलों, मांस, पोल्ट्री और मछली जैसी गैर-अनाज वस्तुओं का अधिक सेवन करने लगे हैं जो पोषण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। खाद्य वस्तुओं से संबंधित मुद्रास्फीति के विश्लेषण से संकेत मिलता है कि हाल की अवधि में खाद्य वस्तुओं संबंधी मुद्रास्फीति के प्रमुख कारक अनाज से भिन्न वस्तुएं हैं। वस्तुतः नवंबर 2009 से खाद्यान्न संबंधी मुद्रास्फीति के अधिकांश भाग में दूध, अंडों, मछली और मांस जैसी प्रोटीन की अधिकता वाली मदों का अधिक योगदान है जिन पर मानसून का कम प्रभाव पड़ता है (चार्ट VI.11)। इस समय प्राथमिक खाद्य वस्तुओं संबंधी मुद्रास्फीति में (वर्षानुवर्ष) दो उप-समूहों - दूध, और

चार्ट VI.11: प्राथमिक खाद्य मुद्रास्फीति के योगदानकर्ता

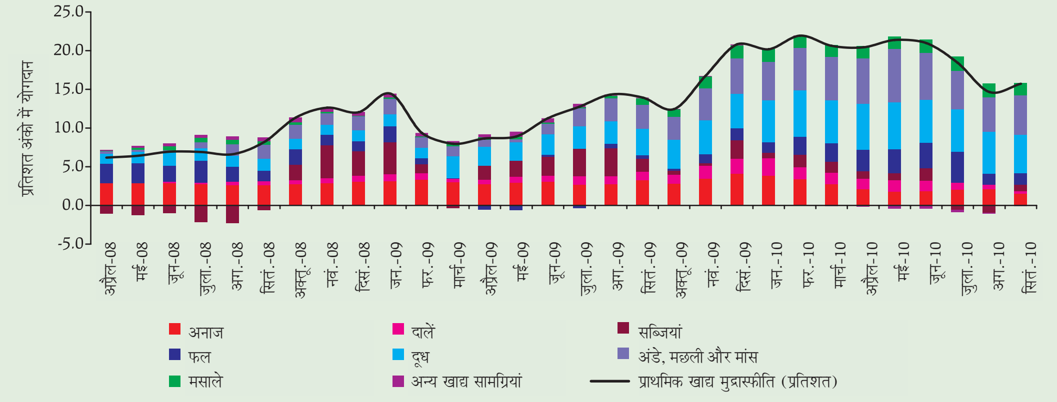

'अंडा,मछली तथा मांस' का दो-तिहाई योगदान है। लेकिन दालों से संबंधित मुद्रास्फीति का स्तर कम है जो एक वर्ष पहले के बहुत अधिक कीमतों के मूल प्रभाव का द्योतक है। इस प्रकार, हाल के महीनों में मुद्रास्फीति में अनाजों और सब्जियों के योगदान में कमी आने के बावजूद खाद्य मुद्रास्फीति अभी भी अधिक है।

VI.21 विशेषतः प्रोटीन आधारित खाद्य वस्तुओं (जिनका हिस्सा खपत वाली वस्तुओं में आमदनी बढ़ने के साथ-साथ बढ़ा है) की कीमतों के अनवरत उच्च स्तर पर बने रहने से, इस जोखिम का संकेत मिलता है कि खाद्य वस्तुओं की कीमतों से संबंधित मुद्रास्फीति ढांचागत स्वरूप धारण कर सकती है तथा और अधिक समय तक बनी रह सकती है। वैश्विक स्तर पर खाद्यान्नों की मांग-आपूर्ति की प्रतिकूल स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए तथा पण्यों की कीमतों में वृद्धि की संभावनाओं के चलते खाद्य वस्तुओं संबंधी मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए अधिकांश पण्यों के मामले में आयात का विकल्प उपलब्ध नहीं रह सकता है। इसके लिए मध्यावधि में खाद्य वस्तुओं संबंधी मुद्रास्फीति का समाधान करने हेतु आपूर्ति में वृद्धि करने वाले उपायों के प्रभावी प्रबंधन की आवश्यकता होगी।

VI.22 गैर-खाद्य प्राथमिक वस्तुओं संबंधी मुद्रास्फीति भी 20 प्रतिशत से अधिक, अर्थात उच्च स्तर पर बनी हुई है जो मार्च 2010 में शक्कर सूचकांक में लगभग 50 प्रतिशत के संशोधन और लौह अयस्क तथा कच्चे कपास की कीमतों में वद्धि का द्योतक है। दिसंबर 2009 से लौह अयस्क की कीमतें दो गुनी हुई हैं तथा कच्चे कपास की कीमतों में सितंबर 2010 में 20 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। घरेलू उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि के बावजूद, वैश्विक स्तर पर पर पण्यों की कीमतों में वृद्धि को दृष्टिगत रखते हुए हाल के महीनों में कच्चे कपास और शक्कर की कीमतों में हुई वृद्धि से यह संकेत मिलता है कि अनुकूल उत्पादन की परिस्थितियों के बावजूद अन्य वस्तुओं संबंधी मुद्रास्फीति में भी वृद्धि हो सकती है।

VI.23 ईंधन समूह संबंधी मुद्रास्फीति पर, नियंत्रित कीमतों के संबंध में सरकार के निर्णयों तथा अनियंत्रित कीमत वाले पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में उतार-चढ़ाव - दोनों का प्रभाव पड़ता है। चूंकि मासिक औसत आधार पर कच्चे तेल की कीमतें (भारतीय बास्केट) अभी तक 2011 के दौरान 75 से 85 अमरीकी डालर के बीच के रेंज में रही हैं, इसलिए ईंधन समूह के अंतर्गत गैर-नियंत्रित कीमतें भी कमोबेश उसी के आस-पास रही हैं। राजकोषीय तथा ईंधन दक्षता संबंधी अच्छी स्थिति से प्रेरित होकर सरकार ने डीज़ल की कीमत में 2 रुपए प्रति लीटर, सार्वजनिक वितरण प्रणाली के केरोसिन की कीमत में 3 रु. प्रति लीटर और घरेलू एलपीजी की कीमत में 35 रु. प्रति सिलिंडर की वृद्धि कर दी और 25 जून 2010 को पेट्रोल की कीमतों पर से नियंत्रण हटा लिया। इन उपायों का प्रत्यक्ष प्रभाव यह पड़ा कि थोक मूल्य सूचकांक संबंधी मुद्रास्फीति में लगभग 0.9 प्रतिशत अंक की वृद्धि हो गई, तथा इनपुट वाली वस्तुओं की लागत बढ़कर, वृद्धि का पूरा प्रभाव मुखर होकर आंशिक प्रभाव पड़ने के कारण बाद में इसके 2.00 प्रतिशत अंक तक हो जाने की संभावना है। चूंकि पेट्रोल की कीमतों पर से नियंत्रण हटाए जाने के बाद उसकी कीमतें जुलाई-सितंबर 2010 की अवधि में, अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों के अनुरूप ही लगभग स्थिर बनी रहीं, इसलिए हेडलाइन मुद्रास्फीति पर पड़ने वाला दबाव नियंत्रित रहा। लेकिन इसके बावजूद ईंधन समूह संबंधी मुद्रास्फीति 2 अंकों में बनी हुई है। 16 अक्तूबर 2010 की स्थिति के अनुसार 11.3 प्रतिशत)।

VI.24 विनिर्मित उत्पादों संबंधी मुद्रास्फीति अप्रैल 2010 से कम हो गई है जिसमें खाद्य उत्पादों की कीमतों में कमी प्रमुख है। लेकिन विनिर्मित उत्पादों का मूल्य सूचकांक 2010-11 के दौरान अभी तक लगभग उसी स्तर पर बना हुआ है जो इस बात का संकेतक है कि मुद्रास्फीति की कमी में पिछले वर्ष के ऊंचे आधार का योगदान सबसे अधिक

सारणी VI.3 : भारत में थोक मूल्य मुद्रास्फीति
(2004-05=100) (साल-दर-साल)

(प्रतिशत)

वस्तु	भार	2009-10 (मार्च)		2010-11 (सितंबर)		वित्तीय वर्ष (मार्च 2010 में समाप्त)	
		मुद्रास्फीति	सी*	मुद्रास्फीति	सी*	मुद्रास्फीति	सी*
1	2	3	4	5	6	7	8
सभी पण्य	**100.0**	**10.2**	**10.2**	**8.6**	**8.6**	**3.9**	**3.9**
1. प्राथमिक लेख	**20.1**	**22.2**	**4.9**	**17.5**	**4.1**	**8.3**	**2.0**
खाद्य वस्तुएं	14.3	20.6	3.3	15.7	2.7	9.4	1.6
i. चावल	1.8	8.1	0.2	4.6	0.1	0.9	0.0
ii. गेहूँ	1.1	14.7	0.2	8.7	0.1	0.1	0.0
iii. दलहन	0.7	25.0	0.2	5.1	0.1	-0.1	0.0
iv. सब्जियां	1.7	13.6	0.2	6.0	0.1	37.1	0.6
v. फल	2.1	18.2	0.4	12.0	0.3	3.6	0.1
vi. दूध	3.2	24.9	0.9	24.0	0.9	5.8	0.2
vii. अंडे, मछली और मांस	2.4	35.5	0.9	30.9	0.9	15.2	0.5
गैर खाद्य वस्तुएं	4.3	20.4	0.9	18.2	0.8	4.6	0.2
i. कच्ची रूई	0.7	20.0	0.1	27.5	0.2	14.0	0.1
ii. तिलहन	1.8	6.7	0.1	5.2	0.1	3.1	0.1
iii. गन्ना	0.6	53.3	0.3	53.3	0.3	0.0	0.0
खनिज	1.5	37.9	0.8	28.5	0.6	7.3	0.2
i. कच्चा पेट्रोलियम	0.9	58.3	0.5	9.7	0.1	-1.1	0.0
2. ईंधन और पावर	**14.9**	**13.8**	**2.1**	**11.1**	**1.7**	**5.4**	**0.8**
i. कोयला	2.1	7.9	0.2	7.9	0.2	0.0	0.0
ii. खनिज तेल	9.4	18.6	1.7	13.6	1.4	6.8	0.7
iii. बिजली	3.5	3.4	0.1	5.0	0.1	5.0	0.1
3. विनिर्मित उत्पाद	**65.0**	**5.2**	**3.3**	**4.6**	**2.8**	**1.6**	**1.0**
i. खाद्य उत्पाद	10.0	15.1	1.5	2.8	0.3	-1.7	-0.2
जिसमें से: चीनी	1.7	44.3	0.8	-4.4	-0.1	-12.8	-0.3
खाद्य तेल	3.0	0.4	0.0	4.9	0.1	4.2	0.1
ii. सूती वस्त्र	2.6	12.7	0.3	14.9	0.3	4.7	0.1
iii. मानव-निर्मित रेशे	2.2	8.4	0.2	9.4	0.2	3.5	0.1
iv. रसायन और उत्पाद	12.0	3.7	0.4	4.3	0.5	1.7	0.2
जिसमें से: उर्वरक	2.7	1.9	0.0	7.5	0.2	4.8	0.1
v. अधात्विक खनिज उत्पाद	2.6	3.2	0.1	2.2	0.1	0.9	0.0
जिसमें से: सीमेंट	1.4	2.3	0.0	1.7	0.0	0.4	0.0
vi. मूल धातु, मिश्र धातु और धातु उत्पाद	10.7	1.4	0.2	6.0	0.6	3.4	0.3
जिसमें से: लोहा और इस्पात	8.1	0.5	0.0	6.2	0.5	3.7	0.3
vii. मशीनरी और मशीनी औज़ार	8.9	1.5	0.1	2.9	0.2	0.8	0.1
जिसमें से: विद्युत मशीनरी	2.3	-1.1	0.0	2.7	0.1	0.8	0.0
viii. परिवहन उपकरण और पुर्जे	5.2	1.2	0.1	4.2	0.2	2.3	0.1
ज्ञापन:							
खाद्य पदार्थ (संमिश्र#)	**24.3**	**18.5**	**4.8**	**10.8**	**3.0**	**5.2**	**1.4**
खाद्य मद (प्रोटिन आधारित)$	**6.4**	**28.7**	**2.0**	**23.9**	**1.9**	**8.6**	**0.7**
विनिर्मित गैर खाद्य उत्पाद	**55.0**	**3.3**	**1.8**	**5.0**	**2.5**	**2.3**	**1.1**
खाद्य पदार्थों को छोड़कर थोक मूल्य सूचकांक	**75.7**	**7.4**	**5.5**	**7.8**	**5.6**	**3.4**	**2.5**
ईंधन को छोड़कर थोक मूल्य सूचकांक	**85.1**	**9.6**	**8.2**	**8.2**	**6.9**	**3.6**	**3.1**
थोक मूल्य सूचकांक - आवश्यक पण्य समूह	**14.4**	**18.6**	**2.9**	**9.1**	**1.5**	**2.9**	**0.5**

* : प्रतिशत अंकों में मुद्रास्फीति में योगदान   #: प्राथमिक खाद्य पदार्थ+विनिर्मित खाद्य उत्पाद
$: इसमें दूध, अंडे, मछली, मांस और दालें शामिल हैं।

था। गैर-खाद्य विनिर्मित उत्पादों संबंधी मुद्रास्फीति सितंबर 2010 में कम होकर 5.0 प्रतिशत हो गई (सारणी VI.3)।

VI.25 भारत में मूल मुद्रास्फीति में अंतर-कालिक उतार-चढ़ाव, जिसकी माप गैर-खाद्य विनिर्मित

चार्ट VI.12: खाद्येतर विनिर्मित मुद्रास्फीति में अस्थिरता

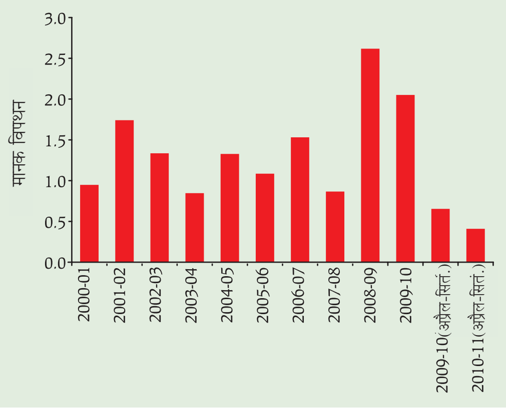

मुद्रास्फीति में आनेवाले मानक अंतर की दृष्टि से की जाती है, और जो नीति-निर्धारण संबंधी प्रयोजनों के लिए महत्त्वपूर्ण है, लंबे समय तक अपेक्षाकृत स्थिर रहने के बाद 2008-09 और 2009-10 में काफी अधिक हो गया (चार्ट VI.12)। कुछ हद तक गैर-खाद्य विनिर्मित मुद्रास्फीति में वृद्धि का कारण वैश्विक स्तर पर पण्यों की कीमतों में हुई वृद्धि हो सकता है क्योंकि इनपुट संबंधी वस्तुओं की बढ़ती हुई कीमतों का असर देश के अंदर विनिर्मित उत्पादों की कीमतों पर भी पड़ेगा। लेकिन 2010-11 के लिए अब तक उपलब्ध आंकड़ों से, होनेवाले उतार-चढ़ाव में पर्याप्त कमी आने का संकेत मिलता है।

उपभोक्ता मूल्यों संबंधी मुद्रास्फीति

VI.26 उपभोक्ता मूल्य संबंधी विभिन्न सूचकांकों द्वारा की गई माप के अनुसार वर्ष 2010-11 में अब तक मुद्रास्फीति कम होती रही। उपभोक्ता मूल्य सूचकांकों सबंधी माप के अनुसार मुद्रास्फीति के उपलब्ध घटकों से संकेत मिलता है कि सितंबर 2010 में मुद्रास्फीति 9.1 से 9.8 प्रतिशत के बीच रही (सारणी VI.4)। थोक मूल्य सूचकांक और उपभोक्ता मूल्य सूचकांक संबंधी मुद्रास्फीति के बीच का अंतर भी हाल के महीनों में कम हुआ है (चार्ट VI.13)।

VI.27 घरेलू वृद्धि की संभावनाओं के और सुदृढ़ होने के कारण मुद्रास्फीति के प्रबंधन का महत्त्व बहुत अधिक हो गया है जिसका संकेत मौद्रिक नीति को सामान्य बनाए जाने से मिलता है। कुल मिलाकर, मुद्रास्फीति की गति, जिसकी शुरुआत आपूर्ति संबंधी आघातों से हुई थी, और जो बाद में अधिक सामान्य स्वरूप की होती चली गई, अब कम हो गई है, लेकिन यह अभी भी ऐसे स्तर पर बनी हुई है जो सुविधाजनक नहीं कही जा सकती। नियंत्रित मूल्यों में वृद्धि तथा पहले की कीमतों में हुई वृद्धि की विलंब से सूचना मिलने के कारण, थोक मूल्य सूचकांक में वृद्धि की गति तेज हो गई। पिछले साल की तुलना में, कृषि की बेहतर उपज की उम्मीदों के बीच, वर्ष के दौरान खाद्य वस्तुओं की कीमतों पर दबाव कम हो सकता है जो एक सकारात्मक

चार्ट VI.13: सीपीआइ और डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति

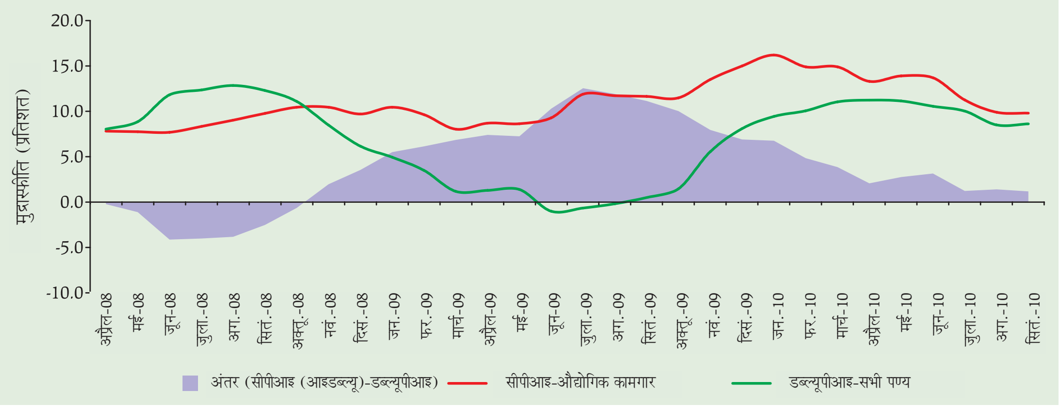

सारणी VI.4 : उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति - प्रमुख समूह

(साल-दर-साल प्रतिशत में घटबढ़)

सीपीआइ उपाय	भार	मार्च-08	मार्च-09	जून-09	सित.-09	दिस.-09	मार्च-10	जून-10	जुला.-10	अग.-10	सित.-10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सीपीआइ-आइडब्ल्यू (आधार: 2001=100)											
सामान्य	**100.0**	**7.9**	**8.0**	**9.3**	**11.6**	**15.0**	**14.9**	**13.7**	**11.3**	**9.9**	**9.8**
खाद्य समूह	46.2	9.3	10.6	12.2	13.5	21.3	16.0	13.9	11.6	9.8	–
पान, सुपारी आदि	2.3	10.9	8.3	8.1	8.0	8.6	9.1	13.0	12.9	12.1	–
ईंधन और लाइट	6.4	4.6	7.4	1.4	4.2	3.4	3.4	6.9	10.3	11.5	–
आवास	15.3	4.7	6.0	6.0	22.1	22.1	33.1	33.1	21.1	21.1	–
कपड़े, बिस्तर आदि	6.6	2.6	5.0	4.1	4.1	4.1	4.0	4.8	4.7	5.5	–
विविध	23.3	6.3	7.4	6.6	5.7	4.2	4.8	4.8	5.4	4.0	–
सीपीआइ-यूएनएमई (आधार:: 1984-85=100)											
सामान्य	**100.0**	**6.0**	**9.3**	**9.6**	**12.4**	**15.5**	**14.9**	**14.1**	**11.5**	**10.3**	–
खाद्य समूह	47.1	7.8	12.2	13.6	14.4	21.4	16.3	13.9	11.7	9.2	–
ईंधन और लाइट	5.5	4.6	5.9	1.3	4.2	3.5	3.3	6.9	10.2	11.6	–
आवास	16.4	4.0	5.8	6.0	22.0	22.0	33.2	33.2	21.0	21.0	–
कपड़े, बिस्तर आदि	7.0	4.3	3.3	4.2	4.1	4.1	4.0	4.8	4.6	5.4	–
विविध	24.0	4.8	8.6	7.3	6.0	4.6	5.3	5.1	5.0	5.0	–
सीपीआइ-एएल (आधार:: 1986-87=100)											
सामान्य	**100.0**	**7.9**	**9.5**	**11.5**	**13.2**	**17.2**	**15.8**	**13.0**	**11.0**	**9.6**	**9.1**
खाद्य समूह	69.2	8.5	9.7	12.4	14.6	20.2	17.7	13.7	11.3	9.1	8.8
पान, सुपारी आदि	3.8	10.4	15.3	14.2	15.5	14.6	15.4	16.6	14.1	11.3	10.8
ईंधन और लाइट	8.4	8.0	11.5	11.0	12.0	14.3	15.2	15.5	14.6	16.6	16.1
कपड़े, बिस्तर आदि	7.0	1.8	7.4	8.3	8.1	8.2	9.1	9.6	9.9	10.1	10.2
विविध	11.7	6.1	6.5	6.1	7.1	7.0	7.6	7.7	7.0	6.3	6.0
सीपीआइ-आरएल (आधार:: 1986-87=100)											
सामान्य	**100.0**	**7.6**	**9.7**	**11.3**	**13.0**	**17.0**	**15.5**	**13.0**	**11.2**	**9.7**	**9.3**
खाद्य समूह	66.8	8.2	10.0	12.4	14.6	20.4	17.7	13.9	11.5	9.5	8.8
पान, सुपारी आदि	3.7	10.6	15.0	14.1	15.4	14.4	15.5	16.7	14.3	11.8	11.1
ईंधन और लाइट	7.9	8.0	11.5	11.0	12.0	14.1	15.0	15.3	14.5	16.4	15.9
कपड़े, बिस्तर आदि	9.8	2.8	8.2	8.8	9.5	10.3	9.8	10.3	10.2	10.3	9.5
विविध	11.9	6.2	6.7	6.2	6.9	6.6	7.2	7.3	6.8	6.1	5.8
डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति आधार वर्ष : 2004-05=100		7.7	1.5	-0.7	1.1	6.9	10.2	10.3	10.0	8.5	8.6
जीडीपी अवस्फीतिक पर आधारित मुद्रास्फीति *		4.9	7.9	0.9	0.7	5.8	4.5	11.8	–	–	–

*: मार्च से संबंधित आंकड़े पूरे वर्ष के लिए हैं।

आइडब्ल्यू: औद्योगिक कामगार. यूएनएमई: शहरी गैर जो कर्मचारी. एएल: कृषि श्रमिक. आरएल: ग्रामीण श्रमिक.

पहलू है। लेकिन इसके बावजूद वर्तमान रुझानों से यह संकेत मिलता है कि खाद्यान्न मुद्रास्फीति में प्रतिकूलता बने रहने और सामान्य मानसून के अनुकूल प्रभाव से प्रभावित न होने के कारण थोक मूल्य सूचकांक की गति सामान्यतः एक दिशा में बनी रहेगी (अर्थात यह बढ़ता रहेगा) तथा इस प्रकार मुद्रास्फीति के समग्र परिवेश के लिए प्रमुख जोखिम विद्यमान रहेगा। खाद्यान्न संबंधी मुद्रास्फीति के बरकरार रहने का कल्याणकारी उपायों पर न केवल प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा (क्योंकि गरीबों के उपभोग समूह में भोजन का हिस्सा अपेक्षाकृत अधिक होता है), बल्कि कुछ समय

के बाद इसका मूल मुद्रास्फीति पर भी प्रभाव पड़ेगा तथा कीमतों पर दबाव सामान्य स्वरूप का हो जाएगा। मुद्रास्फीति के मामले में एक दूसरा महत्त्वपूर्ण जोखिम हाल में वैश्विक पण्य मूल्यों में देखी गई वृद्धि से पैदा हो सकता है जिसका प्रभाव रिकॉर्ड घरेलू उत्पादन के बावजूद हमारे देश में भी पड़ सकता है जैसा कि कपास के मामले में देखा गया। कुछ क्षेत्रों में अधिक सुदृढ़ वृद्धि की गति के परिप्रेक्ष्य में फर्मों की मूल्य-निर्धारण की बढ़ती हुई क्षमता के साथ, क्षमता संबधी कठिनाइयां भी मुद्रास्फीति की प्रक्रिया के लिए जोखिम का स्रोत साबित हो सकती हैं। गैर-खाद्यान्न विनिर्मित मुद्रास्फीति हाल के महीनों में कुछ कम हुई है जिससे यह संकेत मिलता है कि मौद्रिक उपायों का प्रभाव पड़ रहा है, लेकिन मुद्रास्फीति अभी भी उस स्तर पर बनी हुई है जिसे आरामदेह स्तर नहीं कहा जा सकता।